



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—खण्ड (II)  
PART II—Section 3—Sub-Section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

नं. 182]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मार्च 26, 1993/चंत्र 5, 1915

No. 182] NEW DELHI, FRIDAY, MARCH 26, 1993/CHAITRA 5, 1915

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि वह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be field as a  
separate compilation

वित्त मंत्रालय  
(ग्राहिक कार्य विभाग)

(बैंकिंग प्रभाग)

ग्रादेश

नई दिल्ली, 16 मार्च, 1993

का. आ. 202(अ) — बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 56 के खण्ड (यव) के साथ पठित धारा 45 की उपधारा (2) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार उक्त धारा 45 की उपधारा (1) के अतर्गत भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिये गये आवेदन पत्र पर विचार करने के बाद नागपुर अर्बन को-प्रापरेटिव बैंक लिमिटेड, नागपुर (जिसे इसके पश्चात् "महाकारी बैंक" कहा गया है) के संबंध में एतद्वारा 26 मार्च, 1993 बैंक का कारोबार बंद होने से लेकर 26 मित्तम्बर 93 तक और उस दिन को मिलाकर अधिस्थगन आदेश जारी करती है, जिसके ग्रन्तमार अधिस्थगन

आदेश की अवधि के दौरान सहकारी बैंक के विहृत सभी कार्रवाईयों को शुरू किया जाना अथवा इसकी सभी कार्रवाईयों को जारी रखना स्थगित किया जाता है किन्तु इन यह है कि इस प्रकार के अधिस्थगन का किसी भी प्रकार से महाराष्ट्र को-प्रापरेटिव सोसाइटी अधिनियम 1960 के अतर्गत महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले उसके अधिकारी पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

2. केन्द्रीय सरकार एतद्वारा यह निर्देश देती है कि स्वीकृत अधिस्थगन की अवधि के दौरान यह सहकारी बैंक भारतीय रिजर्व बैंक की लिखित पूर्णामति के बिना कोई अर्ण अथवा अधिम नहीं देगा, किसी अधिम का नदीकरण नहीं करेगा, बैंक को किसी परिसम्पत्ति का अन्य संक्रामण अथवा निपटान नहीं करेगा किसी प्रकार का दायिन्व स्वीकार नहीं करेगा, कोई निवेश नहीं करेगा अथवा अपने दायित्वों और देनदारियों के संबंध में अथवा अन्यथा किसी प्रकार की अदायगी नहीं करेगा अथवा अदायगी करना

स्वीकार नहीं करेगा अथवा किसी प्रकार का समझौता अथवा दृहगत नहीं करेगा किन्तु वह निम्नलिखित तरीके में और निम्नलिखित भीमा तक यथास्थिति अदायगिया अथवा खर्च करेगा —

(1) प्रत्येक बैंक अथवा चाल खाने अथवा किसी भी नाम से पुकारे जाने वाले किसी अन्य जमा खाने में शेष रकम में से 250/- रुपये तक

बताते कि अदा की गयी रकम की कुल सीमा किसी एक व्यक्ति (किसी अन्य व्यक्ति के साथ संबंध खाने में नहीं) के मामे से खाते में जमा कुल राशि के 250 रुपए से ऊपर न हो,

यह भी शर्त है कि ऐसे किसी व्यक्ति को कोई रकम अदा नहीं की जाएगी जो किसी प्रकार से सहकारी बैंक का कर्जदार हो,

(2) ऐसे किसी बैंक द्वापट भुगतान आईर अथवा चंको की राशि, जो सहकारी बैंक द्वारा अधिस्थगन आदेश के लागू होने की तारीख से पहले जारी कर दिए गए थे और जिनका उस तारीख तक भुगतान नहीं किया गया है।

(3) 26 मार्च, 1993 को अथवा उससे पूर्व भुगतान के लिए प्राप्त हुडियों की राशि जाहे थे उस तारीख से पहले उस तारीख को या उस तारीख से बाद वसूल की गयी हो।

(4) ऐसा कोई व्यय जो सहकारी बैंक के द्वारा अथवा उसके विरुद्ध दायर किए गए भुकदमे, अपील अथवा सहकारी बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध ली गयी डिक्टी या बैंक को मिलने वाली किसी रकम को वसूल करने के सबध में करना आवश्यक हो,

बताते कि प्रत्येक भुकदमे, अपील अथवा डिक्टी के सबध में किए जाने वाले अपनी गयी रकम यदि 500/- रुपए में अधिक हो, तो खर्च करने से पहले भारतीय रिजर्व बैंक की निम्नित अनुमति ली जाएगी,

(5) ऐसा कोई व्यय जो निषेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम को देय प्रीमियम की राशि हो, और

(6) किसी अन्य मद पर कोई व्यय, जहा तक वह व्यय सहकारी बैंक के विचार में बैंक का दैनिक प्रशासन खलाने के लिए करना अनिवार्य हो,

बताते कि जहां किसी एक कैलेडर मास में किसी मद पर किया गया कुल खर्च अधिस्थगन आदेश से पहले के छ बैलेडर महीनों में उस मद पर किए गए औसत मासिक व्यय में बढ़ जाती हो, अथवा उस अवधि के द्वारान जहां उस मद पर कोई व्यय भी किया गया हो और उस प्रकार किया जाने वाला व्यय 250/- रुपये से बढ़ जाए जो प्रकार का व्यय करने से पूर्व भारतीय रिजर्व बैंक की लिखित रूप में अनुमति लीजाएगी।

3 केन्द्रीय सरकार एतद्वारा यह भी निर्देश देती है कि सहकारी बैंक स्वीकृत अधिस्थगन की अवधि के दौरान —

(क) यह सहकारी बैंक निम्नलिखित और अदायगिया कर सकेगा अर्थात् सरकारी प्रतिभूतियों अथवा अन्य प्रतिभूतियों के बदले महाराष्ट्र सरकार अथवा महाराष्ट्र स्टेट कोआपरेटिव बैंक लि. या भागपुर जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक लि अथवा भारतीय स्टेट बैंक अथवा इसके किन्हीं महायक बैंकों या किसी अन्य बैंक द्वारा सहकारी बैंक को दिए गए अण्णों अथवा अप्रिमो, जो अधिस्थगन आदेश के प्रभावी होने ही तारीख को चुकाए जाने शेष थे, की वापसी अदायगी के लिए आवश्यक हो।

(ख) सहकारी बैंकों को पूर्वोत्तम अदायगिया करने के लिए महाराष्ट्र स्टेट कोआपरेटिव बैंक लि. अथवा किसी अन्य बैंक के साथ अपने खाते खलाने की अनुमति दी जाएगी।

परन्तु इस आदेश का ऐसा कोई आशय नहीं होगा कि इस सहकारी बैंक को किसी रकम के दिए जाने से पहले महाराष्ट्र स्टेट कोआपरेटिव बैंक लि अथवा वैसे किसी अन्य बैंक को इस सबध में अपने आपको आश्वस्त करना होगा कि इस आदेश द्वारा लगाई गयी शर्तों का इस बैंक द्वारा पालन किया जा रहा है।

(ग) यह सहकारी बैंक, उन हुडियों को, जो वसूल न की गयी हो, उनको प्राप्त करने के हकदार व्यक्ति के अनुरोध पर लौटा सकेगा यदि इस सहकारी बैंक का उन हुडियों पर कोई अधिकार अथवा हक न हो अथवा वैसी हुडियों में उसका कोई हित न हो।

(घ) सहकारी बैंक ऐसे माल अथवा प्रतिभूतियों को जो इस (बैंक) के पास किसी ऋण, नगद कर्ज अथवा ओबवरड्राफ्ट के बदले गिरवी, दृष्टिवधक अथवा वधक रखी गयी हो, अथवा अन्यथा प्रभारित की गयी हो, निम्नलिखित मामलों में छोड़ अथवा दे सकेगा —

(1) किसी ऐसे मामले में जहा यथास्थिति अण्णकर्ताओं में मिलने वाली सारी रकम सहकारी बैंक द्वारा बिना शर्त प्राप्त की गई है, और

(2) किसी अन्य मामले में उम सीमा तक की रकम जिन्हीं आवश्यक अथवा सभव हो, निर्दिष्ट अनुपातों से नीचे अथवा उन अनुपातों से नीचे जो अधिस्थगन आदेश के प्रभावी होने से पहले लागू थी इनमें जो भी अधिक हो, उनम आव और प्रतिभूतियों पर माजिन के अनुपातों को कम किए बिना।

MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Economic Affairs)  
(Banking Division)  
ORDER

New Delhi, the 16th March, 1993

S.O. 202(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 45, read with clause (zb) of section 56 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government, after considering the application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of the said section 45, hereby makes an order of moratorium in respect of Nagpur Urban Co-op. Bank Limited, Nagpur (hereinafter referred to as the Co-operative Bank), for the period from close of business on the 26th March, 1993 upto and inclusive of the 26th September, 1993 staying the commencement or continuance of all actions and proceedings against the Co-operative Bank during the period of moratorium, subject to the condition that such stay shall not in any manner prejudice the exercise by the Government of Maharashtra of its powers under the Maharashtra Co-operative Societies Act, 1960.

2. The Central Government hereby directs that, during the period of the moratorium granted to it, the Co-operative Bank shall not, without the prior permission in writing of the Reserve Bank of India, grant any loan, make or renew any advance alienate or dispose of any assets of the bank, incur any liability, make any investment or make or agree to make any payment, whether in discharge of its liabilities or obligations or otherwise, or enter into any compromise or arrangement, except making of payments, or incurring of expenditure, as the case may be, to the extent and in the manner provided hereunder :—

(i) Out of the balance in every savings bank or current account or in any other deposit account, by whatever name called a sum not exceeding Rs. 250.

Provided that the sum total of the amounts paid in respect of the accounts standing in the name of any one person (and not jointly with that of any other person) does not exceed Rs. 250.

Provided further that no amount shall be paid to any depositor who is indebted to the Co-operative Bank in any way,

- (ii) the amounts of any drafts or pay orders or cheques issued by the Co-operative Bank and remaining unpaid on the date on which the order of moratorium comes into force;
- (iii) the amounts of the bills received for collection on or before 26th March, 1993 whether realized before, on or after that date;
- (iv) any expenditure which has necessarily to be incurred in connection with any suits or appeals filed by or against, or decrees

obtained by or against the Co-operative Bank, or for realizing any amounts due to it;

Provided that if the expenditure in respect of each such suit or appeal or decree is in excess of Rs. 500 the permission in writing of the Reserve Bank of India shall be obtained before the expenditure is incurred;

(v) the amounts of premium payable to Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation; and

(vi) any expenditure on any other item is so far as it is in the opinion of the Co-operative Bank necessary for carrying on the day-to-day administration of the Co-operative Bank;

Provided that where the total expenditure on any item in any calendar month exceeds the average monthly expenditure on account of that item during the six calendar months preceding the order of moratorium, or where no expenditure has been incurred on account of that item during the said period and the expenditure on such item exceeds the sum of Rs. 250, the permission in writing of the Reserve Bank of India shall be obtained before the expenditure is incurred.

3. The Central Government hereby also directs that during the period of the moratorium granted to it, the co-operative bank—

(a) may make the following further payments, namely the amounts necessary for repaying loans or advances granted against Government securities or other securities to the Co-operative Bank by the Government of Maharashtra or the Maharashtra State Co-operative Bank Ltd., or Nagpur District Central Co-operative Bank Ltd., or the State Bank of India or any of its subsidiaries or by any other bank and remaining unpaid on the date on which the order of moratorium comes into force;

(b) may operate its accounts with the Maharashtra State Co-operative Bank Ltd., or with any other bank for the purpose of making the payments aforesaid :

Provided that nothing in this order shall be deemed to require the Maharashtra State Co-operative Bank Ltd or such other bank to satisfy itself that the conditions imposed by his order are being observed before any amounts are released in favour of the Co-operative Bank;

(c) may return any bills which have remained unrealized to the persons entitled to receive them on a request being made in this behalf

by such persons, if the co-operative Bank has no right or title to, or interest in such bills;

(d) may release or deliver goods or securities which have been pledged, hypothecated or mortgaged or otherwise charged to it against any loan, cash credit or overdraft, in manner and to the extent—

(i) in any case in which full payment towards all the amounts due from the borrower or borrowers, as the case may

be, has been received by the Co-operative Bank, unconditionally, and

(ii) in any other case, to such an extent as may be necessary or possible, without reducing the proportions of the margins on the said goods or securities below the stipulated proportions which were maintained before the order of moratorium came into force, whichever may be higher.

[F. No. 10(6)193-Dev.]

P. K. TEJYAN, Under Secy.